।।तूं क्यूँ घबराता है।।

(तर्ज: सौ बार जनम लेंगे……)
तूं क्यूँ घबराता है, तेरा श्याम से नाता है,
जब मालिक है सिर पे, क्यूं जी को जलाता है।। टेर।।
तूं देख विनय करके, तेरी लाज बचायेगा,
तूं जब भी बुलायेगा, हर बार ये आयेगा,
अपने प्रेमी को दुखी, ये देख ना पाता है।।
जब कुछ ना दिखाई दे, तूं श्याम का ध्यान लगा,
मेरा श्याम सहारा है, मन में विश्वास जगा,
जब श्याम कृपा होती, रस्ता मिल जाता है।।
जब पड़ती जरूरत है, ये आता तब तब है,
'बिन्नू' का ये अनुभव है, यहाँ सब कुछ सम्भव है,
मेरे श्याम की लीला को, कोई समझ ना पाता है।।

.

Downloaded from khatunareshshyambaba.in
Website design & developed by syllogisticinoftech.com